



**COURSE :- BACHELOR OF LIBRARY AND INFORMATION
SCIENCE (BLIS)**

PAPER :- 3RD

TOPIC :- CANON FOR NOTATION (अंकन के उपसूत्र)

उद्देश्य :- इस पाठ का उद्देश्य अंकन के कैनन को समझना है ।

**PREPARED BY :- DINESH SINGH, CHIEF COORDINATOR,
LIBRARY SCIENCE, NOU**

अंकन के उपसूत्र (Canon for Notation)

ग्रंथों में प्रतिपादित विषयों को सहायक अनुक्रम (helpful sequence) में व्यवस्थित करना सिर्फ अंकन (Notation) के माध्यम से ही सुविधाजनक है। ग्रंथालय वर्गीकरण पद्धतियों में अंकन एक अनिवार्य अवयव है। वर्गीकरण पद्धति की सफलता एवं असफलता अंकन पर निर्भर करती है। अतः, डॉ. रंगनाथन ने अंकन हेतु, निम्न उपसूत्रों को प्रतिपादित किया है, जिनकी सहायता से किसी भी वर्गीकरण पद्धति को सक्षम एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। अंकन एक कृत्रिम भाषा होती है। इस कृत्रिम भाषा का निर्माण निम्न चार उपसूत्रों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

1. सापेक्षता (Relativity)
2. अभिव्यंजकता (Expressiveness)
3. मिश्रित अंकन (Mixed Notation)
4. स्मृति सहायक (Mnemonics)

1. सापेक्षता (Relativity)—इस उपसूत्र के अनुसार वर्गीकरण पद्धति में किसी वर्गांक की लम्बाई उस वर्ग के क्रम अथवा आशय के अनुपात में होना चाहिए, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है, जैसे— किसी ग्रंथालय में उपलब्ध एक ग्रंथ Bone Surgery का कोलन क्लासीफिकेशन के अनुसार वर्गांक L 82 : 4 : 7 होगा। इस वर्गांक में

L = Medical Science

L 82 = Bone

L 82 : 4 = Disease of Bone

L 82 : 4 : 7 Surgery of Disease of Bone.

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि वर्गांक की लम्बाई वर्ग के आशय के अनुपात में है।

अतः इस उपसूत्र का अर्थ है कि जब किसी विषय का विस्तार (Extension) अधिक हो, तो उसके वर्गांक की संख्याएँ छोटी होनी चाहिए और जब उसका आशय (Intention) व्यापक हो, और विस्तार क्रम हो, तो उसके वर्गांक की संख्या लम्बी होनी चाहिए। इस उपसूत्र के अनुसार C.C. के वर्गांक DDC की अपेक्षा छोटे होते हैं। जैसे—

Library and Information Science	DDC 020	CC 2
---------------------------------	------------	---------

2. अभिव्यंजकता (Expressivness)–इस उपसूत्र के अनुसार वर्गांक को उन विशेषताओं का अभिव्यंजक होना चाहिए, जिसे वह अभिव्यक्त करता है अर्थात् वर्गांक को उस वर्ग से संबंधित विशेषताओं का अभिव्यंजक होना चाहिए, जिसके लिए उसे प्रयुक्त किया गया है।

इसका अर्थ यह है कि कोई भी अंक (digit) अनावश्यक नहीं होना चाहिए तथा विभाजन के क्रम में प्रत्येक विशेषता का एक अपना अलग अंक होना चाहिए। जैसे–उपरोक्त उदाहरण L82 : 4 : 7 में प्रयुक्त विशेषताओं का निम्न प्रकार वर्णन किया जा सकता है।

अंक	82	हड्डी (bone) के लिए प्रयुक्त है, जो शरीर के अंग (organ) विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है।
अंक	4	रोग (disease) के लिए प्रयुक्त है, जो समस्या (problem) विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है।
अंक	7	शल्य चिकित्सा (surgery) के लिए प्रयुक्त है जो चिकित्सा (handling) विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है।

DDC में इसके लिए वर्गांक 617.471 होगा जहाँ अंक 617 शल्य चिकित्सा शास्त्र का मुख्य वर्ग (MC) है। 471 हड्डी (bone) शल्य क्रिया के लिए प्रयुक्त है।

इसमें रोग (disease) का अंक अनुपस्थित है। इस तरह हम देखते हैं कि DDC में CC की अपेक्षा अभिव्यंजकता कम है।

3. मिश्रित अंकन (Mixed Notation)–इस उपसूत्र के अनुसार वर्गीकरण पद्धति के अंकन मिश्रित होने चाहिए अर्थात् किसी वर्गीकरण पद्धति में मिश्रित अंकन का प्रयोग करना चाहिए।

सेयर्स महोदय पहले सरलता की वजह से शुद्ध अंकन (Pure Notation) के पक्षधर थे, परंतु परिस्थितियों के अनुसार कालांतर में उन्हें अपना मत बदलना पड़ा और उन्होंने रिचर्डसन (Richardson) के मत को स्वीकार किया कि मिश्रित अंकन ही आदर्श अंकन होता है। डॉ. रंगनाथन मिश्रित अंकन के प्रबल समर्थक थे, तभी तो उन्होंने C.C में उसका प्रयोग किया है। C.C में एक से अधिक प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया गया है, जैसे–

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0

A... — Z

a, b, c, — xyz

' ; : . ' — ' आदि

DDC में शुद्ध अंकन का ही प्रयोग किया गया है।

4. स्मृति सहायक (Mnemonics)–इस उपसूत्र का प्रतिपादन डॉ. रंगनाथन ने सामान्य उपसूत्रों के साथ किया है, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है, फिर भी संक्षिप्त विवरण आवश्यक है।

इस उपसूत्र के अनुसार कोई भी अंक जहाँ कहीं विभिन्न मुख्य वर्गों के अंतर्गत आये उसे एक ही विचार या अर्थ हमेशा अभिव्यक्त करना चाहिए। यदि एक प्रकार के अंकन हमेशा एक ही विचार प्रकट करें, तो स्मरणशीलता की दृष्टि से अच्छा होता है। डॉ. रंगनाथन के अनुसार इस उपसूत्र के तीन प्रकार हैं।

- I. शाब्दिक स्मृति सहायक (Verbal Mnemonics)
 - II. अनुसूचि स्मृति सहायक (Scheduled Mnemonics)
 - III. मौलिक स्मृति सहायक (Seminal Mnemonics)
- इनका विशद वर्णन इस पुस्तक में पहले किया जा चुका है।